A Study of Emotional Intelligence
“ EMRS STUDENT ” Bhopal

A Dissertation Submitted to Barkatullah University Bhopal in thepartial fulfilment of the requirement for the degree of

Two-Year M.Ed. (R.I.E.)

Session 2023-25

`

Research Supervisor

Prof. N.C. Ojha

Department of Education

R.I.E. Bhopal

Research Scholar

Nisha Patel

Student of Two-Year M.Ed. (R.I.E.)

RIE, Bhopal

Roll No. - 2406600317

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION, BHOPAL

National Council of Education Research and Training (NCERT)

Shyamala Hills, Bhopal (M.P.) – 462002

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि "**आदिवासी क्षेत्रीय मॉडल स्कूल(ईएमआरएस) भोपाल के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन**" शीर्षक वाला शोध प्रबंध**,** मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम.एड.) की छात्रा निशा पटेल के द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसका रोल नंबर**-2406600317** और नामांकन संख्या-**R240660590004** है। क्षेत्रीय शिक्षा यह प्रमाणित किया संस्थान, भोपाल द्वारा मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम.एड.) की डिग्री की आंशिक पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जा रहा शोध प्रबंध,आदिवासी क्षेत्रीय मॉडल विद्यालय (**EMRS)** भोपाल के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया जा रहा शोध प्रबंध।

मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश में उनके द्वारा किया गया एक प्रामाणिक शोध है। यह कार्य मौलिक और उनके सर्वोत्तम ज्ञान के अनुसार है और इसे पहले किसी अन्य विश्वविद्यालय में डिग्री के लिए किसी भी रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि वर्तमान स्वरूप में यह शोध प्रबंध शिक्षा में स्नातकोत्तर की डिग्री प्रदान करने के लिए बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त है।

स्थान: आर.आई.ई., भोपाल
दिनाँक-

डॉ. निताई चरण ओझा
प्राध्यापक शिक्षा विभाग

घोषणा पत्र

मैं एतद्द्वारा घोषणा करती हूँ कि आदिवासी क्षेत्रीय मॉडल विद्यालय (**EMRS)** भोपाल के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन शीर्षक वाला यह शोध प्रबंध मेरे द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2023-2025 के दौरान बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश से दो वर्षीय मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम.एड.) की डिग्री की आवश्यकता की आंशिक पूर्ति के लिए किया गया है।

यह अध्ययन डॉ. निताई चरण ओझाशिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल, मध्य प्रदेश के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण में किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य मौलिक है। यह शोध प्रबंध मेरे द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय में किसी डिग्री या डिप्लोमा के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांक:
स्थान: आर.आई.ई., भोपाल

निशापटेल
एम.एड. सेमेस्टर-IV
रोल नं.-2406600317

आभार

मैं हृदय से महसूस करती हूँ कि इस शोध कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक रहे सभी लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना एक आवश्यक कार्य है। इतने सारे और महान उपकारों और आशीर्वादों को याद करते हुए, मैं इस शोध कार्य को पूरा करने सहित अपने जीवन में बहुत सारे लक्ष्यों को पूरा करने का अवसर, क्षमता और योग्यता देने के लिए सर्वशक्तिमान के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता दर्ज करती हूँ।

सबसे पहले, मैं अपने पर्यवेक्षक "आदरणीय डॉ. निताई चरण ओझाशिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान," भोपाल (म.प्र.) के प्रति अपना हार्दिक सम्मान और आभार व्यक्त करना चाहतीहूँ, जिन्होंने मुझे अपने कार्य को पूरा करने में अपने विवेक और रचनात्मकता का प्रयोग करने की पूरी स्वतंत्रता दी और बिना किसी हिचकिचाहट के हर कदम पर उनके अपार धैर्य और प्रोत्साहन के लिए।

मैं डॉ. शिव कुमार गुप्ता, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के प्रति उनके सहयोग, सहयोग और संस्थागत सहायता प्रदान करने के लिए अपना हार्दिक सम्मान और आभार व्यक्त करना चाहतीहूँ।

मैं प्रो. आयुष्मान गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और अन्य संकाय सदस्यों के प्रति अपना हार्दिक सम्मान और आभार व्यक्तकरतीहूँ, जिन्होंने पूरे पाठ्यक्रम के दौरान मेरे शोध कार्य में मेरी बहुत मदद की और मुझे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित किया।

आदिवासी क्षेत्रीय मॉडल विद्यालय **EMRS)** के प्राचार्यजी और सभी स्टॉप सदस्यों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने हमे हमारे Data collection मे पूरा सहयोग किये।

इसके अलावा, मैं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. पी.के. त्रिपाठी और पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों को पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग करने और आवश्यक सामग्री खोजने की अनुमति देने के लिए अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

अंत में, मैं अपने परिवार के सदस्यों और सहपाठियों को अपना विशेष हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे जीवन में आगे बढ़ने में हमेशा मेरा साथ दिया। मेरे प्रियजनों द्वारा निरंतर आशीर्वाद और नियमित प्रोत्साहन ने मेरे शोध प्रबंध कार्य की यात्रा में एक महान भूमिका निभाई है।

निशापटेल
एम.एड. सेम-IV
रोल नंबर- 2406600317

विषय वस्तु

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक
अध्याय 1	परिचय	
	1.1 परिचय	1-2
	1.2 अध्ययन की पृष्ठ भूमि	3
	1.2.1 अध्ययनकीआवश्यकता	3
	1.2.2 अध्ययन, महत्व	4
	1.3 अध्ययन का औचित्य	4-5
	1.4 समस्या का विवरण	5
	1.5 अध्ययन के उद्देश्य	6
	1.6 परिकल्पना/शोधप्रश्न	7
	1.7 अध्ययन की सीमाएँ	7-8
	1.8 मुख्य शब्दों की परिभाषा	8
अध्याय 2	संबंधित साहित्य की समीक्षा	
	2.1 परिचय	9
	2.2 भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा	9
	2.3 भावात्मक बुद्धिमत्ता के मॉडल	9-10
	2.4 संबंधित साहित्य की समीक्षा की व्याख्या	10-13
	2.5आदर्श व्यक्तित्व से संबंधित अध्ययन	13
	2.5.1 मुख्य अध्ययन और निष्कर्ष	13-14
	2.5.2 भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययन	14
	2. 6 शैक्षणिक प्रदर्शन और रोल मॉडल का संबध	14

	2.7 सैद्धात्तिक व वैचारिक ढाँचा	14
	2.7.1 सैद्धान्तिक	14-15
	2.7.2 वैचारिक रूपरेखा	15
	2.8 अनुसंधान का अंतर	15-16
	2.9 भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षा	16
	2.10 निष्कर्ष	16
अध्याय 3	शोधपद्धति	
	3.1 शोध की प्रकृति	16
	3.2 शोध पद्धति	16
	3.3 जनसंख्या	17
	3.4 नमूना	17
	3.5 उपकरण	17
	3.6 डाटा संग्रहण विधि	17
अध्याय 4	डेटा विश्लेषण और परिणामों की व्याख्या	
	4.1 परिचय	18
	4.2 विश्लेषण की योजना	18
	4.2.1 परिकल्पना का परीक्षण	18-19
	4.2.2 आंकड़ों की **सांख्यिकीय** जानकारी	19-20
	4.2.3 भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर कानिर्धारण	21
	4.3 हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के आकड़ो का प्रस्तुतिकरण	21
	4.3.1 हाई स्कूल के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्तास्तरका वितरण	22
	4.3.2 हायर सेकेंडरी के छात्रों की बुद्धिमत्ता स्तर का वितरण	23
	4.4 लिंग् आधारित आंकड़ों का विश्लेषण एवम व्याख्या	23

	4.4.1 आंकड़ोंकाविवरण	23
	4.4.2 सांख्यिकीय विधि	23-25
	4.5 निष्कर्ष	25-29
आधाय 5	निष्कर्ष, सुझाव एवं अनुशंसा	
	5.1 भूमिका	30
	5.2 प्रमुख निष्कर्ष	30
	5.3 व्यावहारिक सुझाव	30-31
	5.3.1 विद्यालयों के लिए	30
	5.3.2 शिक्षकों के लिए	31
	5.3.3 छात्रों के लिए	31
	5.4 अनुसंधान की सीमाएँ	31
	5.5 भविष्य के शोध हेतु सुझाव	31-32
	5.6 निष्कर्ष	32
	सारांश	32-36
	ग्रंथसूची	

ता लका सूची

क्रमांक संख्या	ता लका नाम	पेज संख्या
ता लका 4.2.3	भावनात्मक बुद् धमत्ता के स्तर का निर्धारण।	20
ता लका 4.2.4	वास्त वक आँकड़े।	20
ता लका 4.2.5	भावनात्मक बुद् धमत्ता के स्तर का ववरण।	20-21
ता लका 4.3.1	हाईस्कूल छात्रों की भावनात्मक बुद् धमत्ता स्तर का ववरण	22
ता लका 4.3.2	हायर सेकेंडरी छात्रों की भावनात्मक बुद् धमत्ता स्तर	23

अध्याय-1

1.1परिचय (Introduction):-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से तात्पर्य भावनाओं और उनके संबंधों के अर्थों को पहचानने और उनके आधार पर तर्क करने और समस्या हल करने की क्षमता से है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को समझने, भावना से संबंधित भावनाओं को आत्मसात करने, उन भावनाओं की जानकारी को समझने और उन्हें प्रबंधित करने की क्षमता में शामिल है। शोधकर्ताओं ने **'भावनात्मक बुद्धिमत्ता'** शब्द के उपयोग में आने से बहुत पहले, सामाजिक कौशल, पारस्परिक क्षमता, मनोवैज्ञानिक परिपक्वता और भावनात्मक जागरूकता जैसी संबंधित अवधारणाओं को मापकर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आयामों की जांच की। स्कूलों में शिक्षक 1978 से ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता की मूल बातें पढ़ा रहे हैं, जिसमें स्व-विज्ञान पाठ्यक्रम का विकास और "सामाजिक विकास," "सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा," और "व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता" जैसी कक्षाओं का शिक्षण शामिल है, जिसका उद्देश्य सामाजिक और भावनात्मक क्षमता का स्तर बढ़ाना है" (गोलेमैन, 1995)। सामाजिक वैज्ञानिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अन्य घटनाओं से संबंध उजागर करना शुरू कर रहे हैं, जैसे, नेतृत्व (एशफोर्थ और हम्फ्रे, 1995), समूह प्रदर्शन, व्यक्तिगत प्रदर्शन, पारस्परिक/सामाजिक आदान-प्रदान, परिवर्तन का प्रबंधन, और प्रदर्शन मूल्यांकन करना (गोलेमैन, 1995)।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं के साथ वैध रूप से तर्क करने और विचारों को बढ़ाने के लिए भावनाओं का उपयोग करने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ और क्षमताएँ शामिल हैं:-

1. आत्म-जागरूकता- अपनी भावनाओं को जानना, भावनाओं को पहचानना जैसे वे होती हैं, और उनके बीच भेदभाव करना।
2. मूड प्रबंधन- भावनाओं को संभालना ताकि वे वर्तमान स्थिति के लिए प्रासंगिक हों और आप प्रतिक्रिया दें उचित रूप से।
3. आत्म-प्रेरणा- अपनी भावनाओं को "एकत्रित करना" और आत्म-संदेह, जड़ता और आवेग के बावजूद खुद को एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करना।
4. सहानुभूति- दूसरों में भावनाओं को पहचानना और उनके मौखिक और अशाब्दिक संकेतों को सुनना।
5. रिश्तों को प्रबंधित करना- पारस्परिक संपर्क, संघर्ष समाधान और बातचीत को संभालना।

मेयर और सैलोवी (1993) ने एक मॉडल प्रस्तावित किया जो भावनात्मक ज्ञान के चार अद्वितीय घटकों को अलग करता है: भावना का दृष्टिकोण, भावनाओं का उपयोग करके तर्क करने की क्षमता, भावना प्राप्त करने की क्षमता और भावनाओं की देखरेख करने की क्षमता।

भावनाओं को समझना: काफी समय में पहला कदम उन्हें ठीक से देखना है। एक नियम के रूप में, इसमें अशाब्दिक संकेतों को समझना शामिल हो सकता है, उदाहरण के लिए, गैर-मौखिक संचार और बाहरी दिखावे।

भावनाओं के साथ तर्क करना: अगले चरण में तर्क और बौद्धिक कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए भावनाओं का उपयोग करना शामिल है। भावनाएँ हमें ध्यान केंद्रित करने और प्रतिक्रिया करने में मदद करती हैं; हम वास्तव में प्रतिक्रिया करते हैं चीजें।

भावनाओं को समझना: हम जो भावनाएँ देखते हैं, वे कई तरह के निहितार्थ व्यक्त कर सकती हैं। यदि कोई व्यक्ति गुस्से में भावनाओं का संचार कर रहा है, तो प्रत्यक्षदर्शी को उनके गुस्से का कारण समझना चाहिए और इसका क्या मतलब हो सकता है, उदाहरण के लिए, यदि आपका प्रबंधक गुस्से में काम कर रहा है, तो इसका मतलब यह हो सकता है कि वह आपके

द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी, आईएसएसएन 2348-5396 (ई) आईएसएसएन: 2349-3429 (पी) 2242.

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI) वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता और नियंत्रित करता है। यह छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। EMRS (Eklavya Model Residential School) एक विशेष प्रकार के विद्यालय होते हैं जो अनुसूचित जनजातियों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल अकादमिक ज्ञान या बुद्धिलब्धि (IQ) के आधार पर सफलता प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है। एक सफल जीवन के लिए व्यक्ति का भावनात्मक रूप से स्थिर, आत्म-नियंत्रित और सामाजिक रूप से संवेदनशील होना भी अत्यंत आवश्यक है। यही गुण भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) कहलाते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल अपनी भावनाओं को पहचानता और नियंत्रित करता है, बल्कि दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके अनुसार प्रतिक्रिया देने में भी सक्षम होता है। इसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, प्रेरणा और सामाजिक कौशल जैसे पहलू शामिल होते हैं।

वर्तमान समय में जब छात्र अनेक मानसिक, सामाजिक और शैक्षणिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, ऐसे में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास उनके मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-विश्वास और जीवन कौशल को सुदृढ़ करता है।

एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र न केवल कठिनाइयों का सामना बेहतर तरीके से कर सकता है, बल्कि अपने सहपाठियों, शिक्षकों और परिवारजनों के साथ स्वस्थ संबंध भी स्थापित कर सकता है।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) ऐसे विशेष विद्यालय हैं, जो जनजातीय समुदाय के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण आवासीय शिक्षा प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं। इन विद्यालयों के छात्र विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों से आते हैं, जिससे उनके मानसिक और भावनात्मक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। ऐसे छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है क्योंकि यह उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म-संयम, सामूहिक कार्य क्षमता और जीवन में निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।

भोपाल जिले के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन न केवल उनके व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार को समझने में सहायक होगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि किन क्षेत्रों में उनके भावनात्मक विकास की आवश्यकता है और स्कूल किस प्रकार उन्हें बेहतर मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

1.2 अध्ययन की पृष्ठभूमि: -

मानव जीवन में भावनाएँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में केवल बौद्धिक क्षमता ही नहीं, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) भी विद्यार्थी के समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिससे व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सकारात्मक रूप में व्यक्त करने में सक्षम होता है।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (ई.एम.आर.एस.) विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु स्थापित किए गए हैं। इन विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विशिष्ट पृष्ठभूमि से आते हैं, जिससे उनके भावनात्मक विकास में भी विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि भोपाल स्थित ई.एम.आर.एस. विद्यालयों के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है, किन कारकों का इस पर प्रभाव पड़ता है, और इससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन व सामाजिक व्यवहार पर क्या असर होता है। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं को छात्रों के संपूर्ण विकास के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ अपनाने में सहायता प्रदान कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व(Need and Significance of the Study) :-

1.2.1 अध्ययन की आवश्यकता:-

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तीव्र गति वाले युग में विद्यार्थियों के समग्र विकास में केवल बौद्धिक क्षमता (IQ) ही नहीं, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI)भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ईएमआरएस (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) जैसे संस्थान, जहाँ आदिवासी एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं, वहाँ उनके सामाजिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास की विशेष आवश्यकता होती है। ऐसे छात्रों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास उन्हें जीवन की चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने में सहायक हो सकता है।

वर्तमान समय में शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही है, बल्कि छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास पर भी बल दिया जाने लगा है। विशेष रूप से भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI)एक ऐसा आयाम है, जो विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक सफलता, बल्कि जीवन में आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक व्यवहार और निर्णय क्षमता जैसे महत्वपूर्ण गुण विकसित करने में सहायता करता है।

ईएमआरएस (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु स्थापित किए गए हैं। चूंकि ये छात्र विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं, अतः उनके भावनात्मक विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। इन छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मूल्यांकन करके यह समझा जा सकता है कि वे भावनात्मक रूप से कितने सशक्त हैं, और किन क्षेत्रों में उन्हें समर्थन एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

1.2.2 अध्ययन का महत्व:-

1. यह अध्ययन यह जानने में सहायक होगा कि ईएमआरएस छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है।
2. इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों, सामाजिक व्यवहार, आत्म-नियंत्रण, आत्म-जागरूकता एवं निर्णय लेने की क्षमता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की क्या भूमिका है।
3. अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छात्रों के लिए उपयुक्त परामर्श, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा सकती है।
4. यह शोध नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासन को छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करने में मार्गदर्शन करेगा।
5. यह अध्ययन ईएमआरएस छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।
6. यह स्पष्ट करेगा कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके आत्म-विश्वास, निर्णय क्षमता, सहानुभूति, तनाव प्रबंधन एवं पारस्परिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करती है।
7. अध्ययन के निष्कर्षों से शिक्षकों, परामर्शदाताओं और विद्यालय प्रशासन को छात्रों के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण, परामर्श और सहयोग प्रदान करने की दिशा में मार्गदर्शन मिलेगा।
8. यह शोध नीति निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे आदिवासी छात्रों की शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक पहलुओं को शामिल कर उनके समग्र विकास को सुनिश्चित कर सकें।
9. इससे छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी सहायता मिलेगी, जो कि वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है।
10. यह अध्ययन ईएमआरएस छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।
11. यह स्पष्ट करेगा कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके आत्म-विश्वास, निर्णय क्षमता, सहानुभूति, तनाव प्रबंधन एवं पारस्परिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करती है।
12. अध्ययन के निष्कर्षों से शिक्षकों, परामर्शदाताओं और विद्यालय प्रशासन को छात्रों के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण, परामर्श और सहयोग प्रदान करने की दिशा में मार्गदर्शन मिलेगा।
13. यह शोध नीति निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे आदिवासी
14. छात्रों की शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक पहलुओं को शामिल कर उनके समग्र विकास को सुनिश्चित कर सकें।

इससे छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी सहायता मिलेगी, जो कि वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है।

1.3 अध्ययन का औचित्य (Rationale of the Study):-

EMRS विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र सामान्यतः ऐसे क्षेत्रों से आते हैं जहाँ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संसाधनों की कमी होती है। ये छात्र पढ़ाई के साथ-साथ भावनात्मक चुनौतियों का भी सामना करते हैं, जैसे आत्म-सम्मान की कमी, तनाव, सामाजिक समायोजन में कठिनाई आदि।

यदि इन छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को पहचाना और विकसित किया जाए, तो इससे न केवल उनका व्यक्तित्व विकास होगा, बल्कि उनका शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और भविष्य की सफलता भी प्रभावित होगी।

यह अध्ययन नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों और परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे छात्रों को बेहतर सहयोग और मार्गदर्शन दे सकें।

1.4 समस्या का कथन (Statement of the Problem):

शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से जनजातीय छात्रों के लिए, जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। एकलव्य मॉडल रेसिडेंशियल स्कूल (EMRS)जैसे संस्थानों की स्थापना इन छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समग्र विकास के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है।

भोपाल स्थित EMRS के छात्रों को भी विभिन्न मनोवैज्ञानिक दबावों, सांस्कृतिक विविधताओं, पारिवारिक पृष्ठभूमियों और शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक ऐसा गुण है, जो छात्रों को आत्म-ज्ञान, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक कौशल और संबंध प्रबंधन जैसे पहलुओं में सशक्त बना सकता है। यह गुण विद्यार्थियों को न केवल व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें सामूहिक जीवन में भी अधिक प्रभावी, सहनशील और नेतृत्वकारी बनने में मदद करता है।

हालांकि, अब तक इस विषय पर सीमित शोध उपलब्ध हैं, जो विशेष रूप से भोपाल के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर और उसके प्रभावों पर केंद्रित हों। यह आवश्यक है कि हम यह जानें कि इन छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का वर्तमान स्तर क्या है, कौन-से आंतरिक या बाहरी कारक इस पर प्रभाव डालते हैं, और क्या लिंग, आयु, कक्षा या पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे घटकों के साथ इसका कोई संबंध है।

इस अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करेगा कि EMRS भोपाल के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता किस स्तर तक विकसित है, इसके विभिन्न आयामों को समझेगा, और इस दिशा में सुधार तथा समर्थन के लिए शिक्षकों, नीति-निर्माताओं और परामर्शदाताओं को ठोस सुझाव प्रदान कर सकेगा।

21वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना भी उसका एक प्रमुख लक्ष्य बन गया है। विशेष रूप से जनजातीय छात्रों के लिए, जो सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े माने जाते हैं, शिक्षा एक सशक्तिकरण का माध्यम बन सकती है। इस संदर्भ में, एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल (EMRS) जैसे संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जो अनुसूचित जनजातियों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण आवासीय शिक्षा प्रदान करने के लिए बनाए गए हैं।

1.4.1भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence):-

एक ऐसी सामाजिक-भावनात्मक क्षमता है जो व्यक्ति को अपने और दूसरों के भावों को समझने, नियंत्रित करने, तथा प्रभावी रूप से संवाद करने की योग्यता प्रदान करती है। यह छात्रों को तनाव से निपटने, निर्णय लेने, संबंध बनाने और प्रेरित रहने में मदद करती है। आधुनिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है।

भोपाल स्थित EMRS के छात्रों को दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है — एक ओर वे सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों से जूझते हैं और दूसरी ओर वे अकादमिक प्रतिस्पर्धा के दबाव में रहते हैं। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि उनकी भावनात्मक स्थिति को समझा जाए। यद्यपि सरकार और संस्थाएं उनके शैक्षणिक विकास पर ध्यान देती हैं, लेकिन उनके भावनात्मक पहलुओं की अनदेखी की जाती है, जो उनके समग्र विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

यह अध्ययन इस गंभीर आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है, ताकि यह जाना जा सके कि भोपाल के EMRS छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है, इसमें कौन-कौन से आंतरिक (जैसे लिंग, आयु, व्यक्तित्व) और बाह्य (जैसे परिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वातावरण) कारक प्रभाव डालते हैं, तथा क्या शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक संबंधों पर इसका कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं।

इस शोध का उद्देश्य छात्रों की भावनात्मक ज़रूरतों की पहचान कर, शिक्षकों, काउंसलरों और नीति-निर्माताओं को इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने हेतु प्रेरित करना है। इससे न केवल छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, बल्कि वे समाज में एक संतुलित और उत्तरदायी नागरिक के रूप में भी विकसित होंगे।

1.4.2 **मुख्य समस्याएं जिन पर अध्ययन केंद्रित है:-**

- EMRS भोपाल के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का वर्तमान स्तर क्या है?
- क्या छात्रों की लिंग, आयु, कक्षा या पारिवारिक पृष्ठभूमि भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभावित करती है?
- क्या भावनात्मक बुद्धिमत्ता का छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म-विश्वास, और सामाजिक व्यवहार पर कोई प्रभाव पड़ता है?
- किन कारकों के कारण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता कम या अधिक विकसित हो सकती है?
- क्या विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, और सहपाठियों के साथ संबंध भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं?

1.4.3 **प्रासंगिकता**: -

1. जनजातीय छात्रों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके सामाजिक विकास, जीवन कौशल और आत्म-प्रेरणा के लिए एक अनिवार्य तत्व है।
2. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भावनात्मक पक्ष की उपेक्षा के कारण छात्रों में तनाव, आत्म-संकोच, तथा निर्णय लेने की अक्षमता देखी जाती है।
3. अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष छात्रों की समग्र व्यक्तित्व वृद्धि के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

1.5 **अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study): -**

1. भोपाल मे स्थित EMRS के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तरका मूल्यांकन करना।
2. भोपाल स्थित EMRS के 9-12 हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों का ई.आई. (EI) का पता लगाना।
3. लिंग (लड़के और लड़कियाँ) के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।

1.6 परिकल्पनाएँ(Hypotheses): -

1. भोपाल स्थित EMRS के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर मध्यम से उच्च श्रेणी में आता है।
2. शून्य परिकल्पना H_0 -भोपाल के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में लिंगके आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर होता है।

"भोपाल के **EMRS** छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन"

1. EMRS विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता मध्यम स्तर की होगी।
2. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सकारात्मक संबंध होगा।
3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच सकारात्मक सह संबंध होगा।
4. शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis – H_0): -भोपाल के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में लिंग, कक्षा या पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
5. वैकल्पिक परिकल्पना (Alternative Hypothesis – H_1):- भोपाल के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में लिंग, कक्षा या पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर है।
6. अन्य संभावित विशिष्ट परिकल्पनाएँ: - 9वीं और 10वीं कक्षा के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर पाया जाएगा।
   संयुक्त परिवार और एकल परिवार से संबंधित छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर होगा,
   जिन छात्रों को अधिक सामाजिक व भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होगी।

1.6.1 अनुसंधान प्रश्न (Research Questions): -

1. क्या भोपाल के EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता औसत स्तर की है?
2. क्या लड़कों और लड़कियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई अंतर है?
3. क्या विभिन्न कक्षाओं (जैसे 9वीं और 10वीं) के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर पाया जाता है?
4. क्या पारिवारिक पृष्ठभूमि (संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार) भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभावित करती है?
5. क्या छात्रों को मिलने वाला सामाजिक व भावनात्मक सहयोग उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर को प्रभावित करता है?

1. 7 अध्ययन की सीमाएँ (Delimitations of the study): -

1. यह अध्ययन केवल भोपाल जिले के एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) के छात्रों तक ही सीमित है।
2. अध्ययन में केवल कक्षा 9वीं से 12वीं तक के छात्रों को शामिल किया गया है।
3. इस अध्ययन में केवल छात्रों की भावात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) को ही केंद्रित किया गया है, अन्य मनोवैज्ञानिक या सामाजिक कारकों को नहीं।

4. डेटा संग्रह हेतु केवल प्रश्नावली (questionnaire) विधि का उपयोग किया गया है, अन्य विधियाँ जैसे साक्षात्कार या पर्यवेक्षण शामिल नहीं हैं।
5. यह अध्ययन केवल एक समय अवधि में किया गया है, अतः यह दीर्घकालिक परिवर्तनों को नहीं दर्शाता।
6. अध्ययन में लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आदि का विश्लेषण सीमित रूप में किया गया है।

1.8 मुख्य शब्दों की परिभाषाएँ (Definition of Key Terms): -

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence):

यह व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानता है, समझता है, नियंत्रित करता है तथा प्रभावी रूप से व्यक्त करता है। इसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक जागरूकता, और पारस्परिक संबंधों का प्रबंधन शामिल होता है।

ई.एम.आर.एस. छात्र (EMRS Students):

ई.एम.आर.एस. अर्थात एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय के वे विद्यार्थी जो अनुसूचित जनजातियों के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत हैं। ये विद्यालय विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों के छात्रों के लिए शिक्षा प्रदान करते हैं।

अध्ययन (Study):

किसी विशेष विषय पर व्यवस्थित रूप से जानकारी एकत्र करना, विश्लेषण करना और निष्कर्ष निकालना ही अध्ययन कहलाता है।

बुद्धिमत्ता (Intelligence):

यह मस्तिष्क की व9ह योग्यता है जिससे व्यक्ति सीखने, समझने, सोचने, समस्याओं को हल करने और नई परिस्थितियों में समायोजन करने में सक्षम होता है ।

भावनाएँ (Emotions):

यह व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रियाएँ हैं जो किसी घटना, परिस्थिति या व्यक्ति के प्रति उत्पन्न होती हैं, जैसे– खुशी, ग़ुस्सा, डर, दुःख, प्रेम आदि।

अध्याय-2

संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Related Literature) :-

2.1 परिचय: -

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) आज शिक्षा, मनोविज्ञान, प्रबंधन, और नेतृत्व जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। यह व्यक्ति के जीवन में सफलतापूर्वक निर्णय लेने, तनाव प्रबंधन, आपसी संबंध सुधारने और आत्म विकास में सहायक होती है। इस अध्याय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की विभिन्न परिभाषाएँ, मॉडल, सिद्धांत एवं इससे संबंधित शोधों की समीक्षा की गई है।

2.2 भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा(Definition of Emotional Intelligence) :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता, नियंत्रित करता और उन्हें प्रभावशाली तरीके से उपयोग करता है।

वैज्ञानिकोंकेअनुसारपरिभाषा:-

डेनियल गोलेमैन (1995):-

"भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्वयं को प्रेरित करने, निराशाओं का सामना करने, आवेग को नियंत्रित करने, मूड को नियंत्रित करने और दूसरों के साथ सहानुभूति रखने की क्षमता है।"

सैलोवी और मेयर (1990):-

"भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तात्पर्य विचारों की सहायता करने, भावनाओं और भावनात्मक अर्थों को समझने और भावनाओं को प्रतिबिंबित रूप से नियंत्रित करने के लिए भावनाओं को समझने, उन तक पहुंचने और उत्पन्न करने की क्षमता से है।"

2.3 वास्तुशिल्प के मॉडल (भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मॉडल) :-

1. **क्षमता मॉडल - सैलोवी और मेयर द्वारा प्रस्तावित**

   यह मॉडल चिह्न है कि ई. एक इमैजिनिक योग्यता है।

2. **मिश्रित मॉडल - डैनियल गोलेमैन द्वारा विकसित**

   यह ईआई को व्यक्तित्व विशिष्टता और सामाजिक कौशल के मिश्रण के रूप में देखा जाता है।

3. **विशेषता मॉडल - पेट्राइड्स और फ़र्नहैम**

   यह ईआई को व्यवहार और व्यक्तित्व से संबंधित संकेत देता है।

   उत्कृष्टता और शिक्षा (एली और शिक्षा)

   ई.आई. छात्रों के अनुशासन, आत्म-सम्मान, आदि

2.4 संबंधित साहित्य की समीक्षा :-

वंदना गर्ग 2017. आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन। वयस्कता से पहले की अवस्था वह अवधि होती है, जिसके दौरान एक किशोर को पता चलता है कि वह कौन है और वह वास्तव में क्या महसूस करता है। यह युवाओं के लिए करुणा, वैचारिक सोच और भविष्य के समय के दृष्टिकोण के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करने का एक महत्वपूर्ण समय है; एक ऐसा समय जब माता-पिता के साथ घनिष्ठ और आश्रित संबंध साथियों और विभिन्न वयस्कों के साथ अधिक चरम संबंधों के लिए दृष्टिकोण प्रदान करना शुरू करते हैं। किशोरावस्था भावनात्मक मुद्दों के लिए सबसे कमजोर अवस्था है, इसलिए किशोरों को भावनाओं के बारे में सिखाना और वे दूसरों और उनकी गतिविधियों को कैसे प्रबंधित करते हैं, यह उनके दिन-प्रतिदिन के संघर्षों और अच्छे संबंधों को बनाए रखने में असाधारण रूप से उपयोगी हो सकता है।
वर्तमान अध्ययन बैतूल (म.प्र.) के आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करने के लिए किया गया था। मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के विभिन्न उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से किशोर छात्रों का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना करण तकनीक का उपयोग किया गया था। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लिए डेटा एकत्र करने के लिए मंगल और मंगल भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची का उपयोग किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए स्वतंत्र नमूने टी-परीक्षण का उपयोग किया गया था। परिणामों में पाया गया कि जनजातीय और गैर-जनजातीय किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप पर 0.01 महत्व के स्तर पर काफी भिन्नता है। गैर-जनजातीय किशोरों ने जनजातीय छात्रों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उच्च स्तर दिखाया। इसके अलावा अध्ययन से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप पर आदिवासी किशोर लड़कों और गैर-आदिवासी किशोर लड़कों और आदिवासी किशोर लड़कियों और गैर-आदिवासी किशोर लड़कियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद हैं।

ज्योति राठी 2015. स्कूल के प्रकार के संबंध में किशोर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन। यह अध्ययन हिमाचल प्रदेश के सिरसा जिले से जानबूझकर चुने गए वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले सौ किशोरों (50 लड़के 50 लड़कियाँ) पर किया गया था। दोनों स्कूलों से ग्यारहवीं और बारहवीं की बरकरार कक्षाएँ ली गई।
आवश्यक जानकारी के संग्रह के लिए अन्वेषक ने डॉ. एस. के. मंगल और श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची-एमईआईआई (2004) का उपयोग किया।

इरा त्रिपाठी 2016. भावनात्मक बुद्धिमत्ता समायोजन से संबंधित रांची (झार खंड) जिले के आदिवासी गैर-आदिवासी किशोरों का एक अध्ययन। इस अनुभवजन्य पत्र का उद्देश्य आदिवासी-गैर-आदिवासी किशोर समूह में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन के बीच संबंधों की जांच करना था। कई अध्ययनों से पता चला है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक बफर के रूप में काम करती है।
समायोजन के मामले में, इसे ध्यान में रखते हुए, रांची जिले के आदिवासी-गैर-आदिवासी किशोर समूह में समायोजन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव को देखने के लिए वर्तमान अध्ययन किया गया था। अध्ययन के लिए नमूने में रांची जिले के 200 पुरुष और 200 महिला प्लस दो छात्र शामिल थे। पुरुष और महिला छात्रों को आगे पुरुष आदिवासी, पुरुष गैर-आदिवासी और महिला आदिवासी, महिला गैर-आदिवासी समूहों में विभाजित किया गया था। छात्रों को शहर के विभिन्न स्कूलों से चुना गया था। REIT- रोकिया ज़ानिनुद्दीन भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बेल एडजस्टमेंट इन्वेंटरी का परीक्षण उपर्युक्त समूहों पर किया गया था। परिणामों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन महत्वपूर्ण रूप से (01 स्तर पर) सहसंबद्ध हैं। यह सभी समूहों के

लिए सही था । यह भी पाया गया कि आदिवासी-गैर-आदिवासी समूह में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन के विभिन्न पैटर्न हैं।

नंदवाना और जोशी (2010) ने उदीपुर के टीडी गांव के उद्देश्यपूर्ण रूप से चुने गए माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 16 से 18 वर्ष की आयु के60आदिवासी किशोरों पर एक अध्ययन किया। आदिवासी किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का आकलन एस के मंगल और शुभ्रा मंगल द्वारा एक मानकीकृत भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची (एमईआईआई) का संचालन करके किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश किशोरों (55%)में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर कम पाया गया। आदिवासी किशोर लड़के और लड़कियों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर था; लड़के तुलनात्मक रूप से लड़कियों की तुलना में अधिक थे।

श्री देवी और परवीन (2008) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समायोजन, आत्म अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन किया और पाया कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समायोजन, आत्म अवधारणा और उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध था।

कुमार (2014) ने IXthक्लास के 100 छात्रों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) के भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन के सह संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध था।

लाल (2014) ने मेरठ क्षेत्र से क्लस्टर रैंडम सैंपलिंग तकनीक के माध्यम से 300 छात्रों का नमूना लेकर कला और विज्ञान स्ट्रीम के पुरुष और महिला छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करने के उद्देश्य से शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में अनुसूचित जाति के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया और पाया कि उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले कला और विज्ञान स्ट्रीम के पुरुष अनुसूचित जाति के छात्रों के औसत उपलब्धि अंकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर था, उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली कला स्ट्रीम की महिला अनुसूचित जाति की छात्रों के औसत उपलब्धि अंकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर था। इसके अलावा, अनुसूचित जाति के पुरुष छात्रों में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता थी और वे अपने समकक्षों की तुलना में शैक्षणिक रूप से बेहतर थे।

चामुंडेश्वरी (2013) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच की। उच्चतर माध्यमिक स्तर से लिए गए 321 छात्रों का नमूना। परिणाम ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण सह संबंध दिखाया।

कुमार, मेहता और माहेश्वरी (2013)ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा, मनोवैज्ञानिक समायोजन और शैक्षणिक प्रदर्शन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच की। उन्होंने पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

उमादेवी (2013) ने किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया ।

सुराना और रावत (2014) ने बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं में औसत से अधिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है। व्यक्तिगत कारकों में, लिंग ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक महत्वपूर्ण लेकिन मध्यम प्रभाव दिखाया, जबकि भाषा और शिक्षा धाराओं के माध्यम का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

एबिनाग्बोम और निज़ाम (2016) ने जांच की कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है। परिणामों ने पाँच भावनात्मक बुद्धिमत्ता चर और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध प्रकट किया। इसके अतिरिक्त, प्रतिगमन विश्लेषण ने पहचाना कि केवल सहानुभूति और आत्म-प्रेरणा ने ही शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

घनी और शर्मा (2017) ने भावनात्मक बुद्धिमता और व्यय के बीच संबंध पर किया है: भारतीय संदर्भमें एक अध्ययन में पाया गया कि जो व्यक्ति सहानुभूति पूर्ण और आत्मविश्वासी होते हैं, वे अंतर्मुखी, निराशा वादी, विक्षिप्त और प्रभावशाली व्यक्तियों की तुलना में जब भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करते है।

अजय (2019) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और छात्रों की गणित में उपलब्धि के बीच संबंधों पर एक अध्ययन किया, निष्कर्षों ने इन भावनात्मक बुद्धिमत्ता डोमेन और छात्रों के गणित प्रदर्शन के बीच कमजोर सह संबंधों का खुलासा किया, जिसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके परिणामों में 1%से भी कम भिन्नता में योगदान देतीहै।

फतेहा और अव्वाद (2020) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव से निपटने की शैलियों के बीच संबंध की खोज की। निष्कर्षों से पता चला कि प्रेरणा और सहानुभूति भावनात्मक बुद्धिमत्ता के शीर्ष स्कोरिंग घटक थे। अधिकांश छात्रों ने सक्रिय समस्या-समाधान और भावनात्मक मुकाबला रणनीतियों का प्रदर्शन किया। निष्कर्षों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव से निपटने के तरीकों के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सह संबंध भी प्रकट किया।

कुमार (2020) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि लिंग, विषय स्ट्रीम, स्कूल का स्थान, पारिवारिक संरचना, पिता का व्यवसाय और पारिवारिक आय जैसे कारकों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कुल मिलाकर, छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर औसत पाया गया, जिसमें महिला छात्रों ने अपने पुरुष साथियों की तुलना में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित की।

डार और गिलान (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता की जांच करने की कोशिश की। अध्ययन के निष्कर्षों ने शिक्षकों के बीच समग्र भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर में महत्वपूर्ण अंतरों को उजागर किया, विशेष रूप से "आत्म-जागरूकता" और "सामाजिक कौशल" के आयामों में।

वेणुकापल्ली (2023) ने प्री-सर्विस शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-प्रभावकारिता पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि प्री-सर्विस प्रशिक्षु शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और उनकी आत्मप्रभावकारिता धारणाओं के बीच एक कमजोर सकारात्मक संबंध है।

2.5 आदर्श व्यक्तित्व से संबंधित अध्ययन (Role Modelsसे संबंधित अध्ययन) :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)के विकास में आदर्श व्यक्तित्वों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब छात्र अपने जीवन में किसी आदर्श व्यक्तित्व को अपनाते हैं — जैसे माता-पिता, शिक्षक, समाज के प्रभावशाली व्यक्ति, या ऐतिहासिक महान व्यक्तित्व — तो वे उनके गुणों, व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

EMRSके छात्रों के संदर्भ में, यह देखा गया है कि जब उनके पास स्पष्ट और सकारात्मक रोल मॉडल होते हैं, तो वे आत्म नियंत्रण, सहानुभूति, आत्म-जागरूकता और संबंध बनाने की क्षमताओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। आदर्श व्यक्तित्व विद्यार्थियों के अंदर प्रेरणा, उद्देश्य और आत्मविश्वास जगाने का कार्य करते हैं।

कुछ प्रमुख बिंदु जो शोध में सामने आए हैं:-

1. शिक्षकों का प्रभाव – शिक्षकों का व्यवहार और संवाद छात्रों के भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन छात्रों ने अपने शिक्षकों को आदर्श माना, उनमें भावनात्मक स्थिरता अधिक पाई गई।
2. परिवार के सदस्य – माता-पिता या भाई-बहन जिनके पास उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है, वे छात्रों को बेहतर तरीके से मार्गदर्शन दे पाते हैं।
3. लोकप्रिय नेता/महापुरुष – कुछ छात्र महात्मा गांधी, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, या रानी लक्ष्मीबाई जैसे राष्ट्रीय आदर्शों से प्रेरणा लेते हैं, जिससे उनमें आत्म-अनुशासन और साहस की भावना विकसित होती है।
4. सामाजिक आदर्श – समाज में सकारात्मक योगदान देने वाले व्यक्ति जैसे कि डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता या सैनिक भी छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

आदर्श व्यक्तित्व भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं, विशेषकर ऐसे छात्र जिनका पारिवारिक या सामाजिक समर्थन सीमित होता है, उनके लिए रोल मॉडल अत्यंत प्रेरणादायक भूमिका निभाते हैं।

शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में किए गए अनेक शोध यह सिद्ध करते हैं कि किसी व्यक्ति के जीवन में आदर्श व्यक्तित्व (Role Model) का होना उसके व्यक्तित्व निर्माण और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से किशोर अवस्था के छात्रों के लिए रोल मॉडल एक प्रेरणास्रोत होते हैं जो उनके विचारों, निर्णयों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

2.5.1. मुख्य अध्ययन और निष्कर्ष:

1. **बैंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत(Albert Bandura – Social Learning Theory):**

   बैंडुरा ने यह सिद्ध किया कि बच्चे और किशोर अपने आस-पास के लोगों को देखकर व्यवहार सीखते हैं। जब कोई छात्र अपने रोल मॉडल को देखता है, तो वह उसके गुणों, सोचने के तरीके और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं की नकल करता है। इससे उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित होती है।

2. **डॉ. डैनियल गोलमैन का अध्ययन (Emotional Intelligence, 1995):**

गोलमैन के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता में आत्म-ज्ञान, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे घटक शामिल हैं। यदि किसी छात्र के रोल मॉडल में ये गुण स्पष्ट रूप से दिखते हैं, तो वह छात्र भी इन गुणों को अपनाने की कोशिश करता है।

2.5.2. भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययन:

कई भारतीय शोधों में यह पाया गया है कि ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों के छात्र जिनके पास आदर्श व्यक्तित्व का मार्गदर्शन होता है, वे कठिन परिस्थितियों में भी मानसिक रूप से मजबूत और भावनात्मक रूप से संतुलित रहते हैं। एकलव्य विद्यालयों में ऐसे छात्रों की भावनात्मक स्थिति बेहतर देखी गई है, जिन्होंने अपने शिक्षकों, माता-पिता या ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को रोल मॉडल के रूप में स्वीकार किया है।

2.6 शैक्षणिक प्रदर्शन और रोल मॉडल का संबंध:

अनेक शोध बताते हैं कि जिन छात्रों के पास प्रेरणादायक रोल मॉडल होते हैं, उनका आत्म-विश्वास अधिक होता है और वे अपने शैक्षणिक तथा सामाजिक जीवन में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।

निष्कर्ष:

रोल मॉडल केवल प्रेरणा के स्रोत नहीं होते, बल्कि वे छात्रों के भीतर भावनात्मक समझ, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होते हैं। EMRS जैसे संस्थानों में यदि छात्रों को सकारात्मक और सक्रिय रोल मॉडल मिलते हैं, तो उनका भावनात्मक और समग्र विकास अत्यधिक प्रभावशाली होता है।

2.7 सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढांचा (Theoretical and Conceptual Framework): -

2.7.1सैद्धांतिक-भावनात्मक:-

बुद्धिमत्ता एक ऐसी क्षमता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, पहचानने, प्रबंधित करने और नियंत्रित करने में सक्षम होता है।

इस शोध का आधार डैनियल गोलमैन (Daniel Goleman) का भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सिद्धांत है, जिसमें उन्होंने EI के पाँच प्रमुख घटकों को प्रस्तुत किया है: -

⇒ **स्व-चेतना (Self-awareness):**अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता।

⇒ **स्व-विनियमन (Self-regulation):**अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और सकारात्मक दिशा में मोड़ने की योग्यता।

⇒ **प्रेरणा (Motivation):**लक्ष्य प्राप्ति हेतु स्वयं को प्रेरित करने की क्षमता।

⇒ **सहानुभूति (Empathy):**दूसरों की भावनाओं को समझने और महसूस करने की योग्यता।

⇒ **सामाजिक कौशल (Social Skills):**सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की क्षमता।

2.7.2 वैचारिक रूपरेखा (Conceptual Framework): -

इस अध्ययन में यह मान्यतालीगई है कि EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) के छात्रों के भावनात्मक अनुभव उनके सामाजिक, शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभावडालतेहैं। इन छात्रों का वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि, और शिक्षण पद्धति, उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभावित करसकतेहैं।

इस शोध में निम्नकारकों का विश्लेषण किया गया है: -

लिंग (Gender)

1. कक्षा स्तर (Class level).
2. सामाजिक पृष्ठभूमि (Socio-economic background).
3. विद्यालयीन वातावरण (School environment).

इन कारकों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध को जानने का प्रयास इस अध्ययन के वैचारिक ढांचे की आधारशिला है।

2.8 अनुसंधान का अंतर (Research Gap): -

वर्तमानसमय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) पर अनेक शोध किए गए हैं, जिनमें यह स्थापित किया गया है कि EI विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिकानिभाती है। परंतु, इन अध्ययनों में अधिकांश ध्यान शहरी या सामान्य विद्यालयों के छात्रों पर केंद्रित रहा है।EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय)जैसे विशेषप्रकार के आवासीय विद्यालय, जहाँअधिकांश छात्र अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) से आतेहैं, वहाँ के छात्रों के भावनात्मक अनुभव और बुद्धिमत्ता पर सीमित अध्ययन उपलब्धहैं। भोपाल जिले के EMRS छात्रों पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित अनुसंधान न के बराबर है।इसके अतिरिक्त, निम्नबिंदु अनुसंधान का अंतर दर्शातेहैं:

1. अधिकांश पूर्ववर्ती शोधों में सामाजिक या पारिवारिक पृष्ठभूमि को कम महत्व दिया गया है।
2. जनजातीय छात्रों के भावनात्मक विकास के विशेष संदर्भ में प्रासंगिक डेटा का अभाव है।
3. विशेष रूप से भोपाल जिले में स्थित EMRS विद्यालयों के छात्रों की EI का तुलनात्मक या वर्गीकृत विश्लेषण उपलब्ध नहीं है।

4. लिंग, कक्षा स्तर तथा शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर EI में संभावित भिन्नताओं को लेकर सीमित अध्ययन हुए हैं।
5. अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन शहरी या सामान्य विद्यालयों के छात्रों पर केन्द्रित रहे हैं, जबकि आदिवासी क्षेत्रों में स्थित EMRS छात्रों पर सीमित शोध हुआ है।
6. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व विशेषताओं के आपसी संबंध पर बहुत कम अध्ययन विशेष रूप से भोपाल के EMRS छात्रों के संदर्भ में उपलब्ध हैं।
7. उपलब्ध अध्ययनों में सांस्कृतिक कारकों को समुचित रूप से नहीं जोड़ा गया है, जबकि यह कारक EMRS छात्रों के व्यक्तित्व और भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।अधिकांश अध्ययन मात्रात्मक रहे हैं, गहन विश्लेषण हेतु गुणात्मक पहलुओं की भी आवश्यकता है।

इस अध्ययन का उद्देश्यइन्हीं अनुसंधान अंतरालों को भरना है, जिससे EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बेहतरढंग से समझा जा सके और उनके सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावीशैक्षिक रणनीतियाँ बनाई जा सकें।

2.9 भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षा (El and Education): -

- EI छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म-सम्मान, और सामाजिक समायोजन में सुधार लाती है।
- यह तनाव, परीक्षा की चिंता और व्यवहार समस्याओं को कम करती है।
- शिक्षक यदि EI में कुशल हों, तो वे छात्रों को बेहतर भावनात्मक सहायता प्रदान कर सकते हैं।

2.10 निष्कर्ष:-

इस अध्याय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा, सिद्धांत, मॉडल और इससे जुड़े शोधों की विस्तृत समीक्षा की गई। यह स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के सम्पूर्ण विकास में एक निर्णायक भूमिका निभाती है, विशेषकर EMRS जैसे विशेष शैक्षणिक संदर्भों में ।

अध्याय-3

शोध प्रविधि (Research Methodology): -

3.1 शोध की प्रकृति (Nature of the Research):

यह शोध एकवर्णात्मक (Descriptive)तथासर्वेक्षणात्मक (Survey Method)अध्ययन है। इसमें छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है।

3.2 शोध पद्धति (Research Method):

इस अध्ययन मेंसर्वेक्षण विधिका प्रयोग किया गया है, जिससे छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता कोप्रश्नावली के माध्यम से मापा गया।

3.3 जनसंख्या (Population):

इस अध्ययन की जनसंख्या भोपाल ज़िले के EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय)में अध्ययनरत कक्षा 9वीं से 12वीं तक के छात्र हैं।

3.4 नमूना (Sample):

EMRS स्कूलके 52 लड़के और 43 लड़कियों का नमूना यादृच्छिक रूप से लिया गया। आयु सीमा 14 से 24 वर्ष थी।शोध के लिए 95 छात्रों को चुना गया, इनमें लड़के व लड़कियाँ दोनों शामिलहै।

3.5 उपकरण (Tool):

भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापने के लिए.डॉअनितासोनीऔरडॉ. अशोकशर्माभावनात्मक बुद्धिमत्ता मापन प्रश्नावली"का प्रयोग किया गया। इसमें पाँच आयाम शामिल हैं:

1) आत्म-चेतना (Self-awareness)
2) आत्म-नियंत्रण (Self-regulation)
3) प्रेरणा (Motivation)
4) सहानुभूति (Empathy)
5) सामाजिक कौशल (Social skills)

3.6 डाटा संग्रहण की विधि (Data Collection Method):

प्रश्नावली को छात्रों के बीच वितरित किया गया और उनके उत्तर एकत्रित किए गए। सभी छात्रों को दिशा-निर्देश देकर उत्तर देने को कहा गया।

3.7 **डाटा विश्लेषण की विधि (Data Analysis Method):**

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषणमाध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) औरt-testजैसी सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया।

अध्याय-4

4.1परिचय

इस अध्याय में भोपाल स्थित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (Eklavya Model Residential School -EMRS) के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence - EI) के स्तर का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण छात्रों के EI स्कोर के Mean (माध्य) और Standard Deviation (मानक विचलन) के आधार पर तीन वर्गों में बाँटकर किया गया है: उच्च (High), औसत (Average), और निम्न (Low)।

4.2 विश्लेषण की योजना (Analysis Plan):

इस अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण मुख्य रूप से वर्णात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) तथा अवर्णात्मक सांख्यिकी (Inferential Statistics) के माध्यम से किया गया है।

विश्लेषण की योजना निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित रही

1. भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का निर्धारण - छात्रों के EI स्कोर के Mean (माध्य) और Standard Deviation (मानक विचलन) के आधार पर उन्हें उच्च (High), औसत (Average), और निम्न (Low) वर्गों में विभाजित किया गया।

2. लिंग (Gender) के आधार पर तुलना यह जाँचा गया कि क्या लड़के और लड़कियों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर है। इसके लिए t-test का उपयोग किया गया।

3. श्रेणीवार तुलना - कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं, और 12वीं के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्कोर में भिन्नता की जाँच हेतु ANOVA (Analysis of Variance) का उपयोग किया गया।

4.2.1परिकल्पना का परीक्षण (Hypothesis Testing):

इस अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया

परिकल्पना 1:

शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis - Ho): EMRS के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता औसत स्तर की है।

वैकल्पिक परिकल्पना (Alternative Hypothesis - H_1): EMRS के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता औसत से भिन्न है।

परीक्षण विधि One-sample t-test

परिकल्पना 2:

Ho: लड़कों और लड़कियों के EI स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H_1: लड़कों और लड़कियों के EI स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।

परीक्षण विधिः Independent t-test

परिकल्पना 3:

Ho: विभिन्न कक्षाओं (9वीं से 12वीं) के छात्रों के EI स्कोर में कोई अंतर नहीं है।

H_1: विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के EI स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर है।
⟶ परीक्षण विधिः One-way ANOVA

4.2.2 आकड़ोंकीसांख्यिकीय जानकारी (Statistical Details):

कुल छात्र संख्या (N): 95

माध्य (Mean): 84

मानक विचलन (Standard Deviation): 7

4.2.3 भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का निर्धारण:

क्रमांक	स्तर	स्कोर सीमा	वर्गीकरण का आधार
1	उच्च	91 से अधिक	अत्यधिकभावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र
2	औसत	78 से 90	सामान्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र
3	निम्न	77 से कम	कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र

4.2.4वास्तविक आँकड़े (Actual Data):

क्रमांक	स्तर	छात्र संख्या	प्रतिशत
1	उच्च	14	(14÷95) ×100=14.74%
2	औसत	62	(62÷95) ×100=65.26%
3	निम्न	19	(19÷95) ×100= 20.00%

4.2. 5 सारणी: भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का वितरण

स्तर	स्कोर सीमा	छात्र संख्या	प्रतिशत%
उच्च	91 से ऊपर	14	14.74%
औसत	78 से 90 तक	62	65.26%
निम्न	77 से नीचे	19	20.%

व्याख्या (Interpretation):

अध्ययन में शामिल 95 छात्रों में से 62 छात्र (65.26%) औसत भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर पर पाए गए, जो यह दर्शाता है कि विद्यालय के अधिकतर छात्रों में भावनाओं को पहचानने, नियंत्रित करने और सामाजिक संबंध बनाए रखने की सामान्य योग्यता मौजूद है।

14 छात्र (14.74%) उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता श्रेणी में आए, जो यह संकेत करता है कि ये छात्र आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, और आपसी समझदारी में बेहतर हैं।
वहीं 19 छात्र (20.00%) ऐसे पाए गए जिनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता निम्न स्तर पर है। इन छात्रों को विशेष परामर्श, सामाजिक कौशल प्रशिक्षण और जीवन कौशल कार्यक्रमों की आवश्यकता हो सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion):

इस अध्याय के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भोपाल स्थित ई.एम.आर.एस. विद्यालय के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का औसत स्तर प्रबल है। अधिकांश छात्र औसत स्तर पर हैं, जबकि एक निश्चित संख्या में छात्र अत्यधिक तथा कुछ निम्न स्तर पर भी हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि विद्यालय में भावनात्मक विकास हेतु उपयुक्त वातावरण और मार्गदर्शन की आवश्यकता है, जिससे सभी छात्रों को उच्च स्तर की भावनात्मक योग्यता प्राप्त हो सके।

4.3 हाईस्कूलऔरहायर सेकेंडरीस्कूलकेछात्रोंकेआकड़ोका प्रस्तुतिकरण:

इस अध्याय में भोपाल स्थित EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) के हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कुल 95 छात्रों (48 हाई स्कूल एवं 47 हायर सेकेंडरी) को शामिल किया गया। विश्लेषण के लिए तीन स्तर निर्धारित किए गए:

1. उच्च स्तर (High Level): स्कोर > 91
2. औसत स्तर (Average Level): स्कोर 79 से 91 तक
3. निम्न स्तर (Low Level): स्कोर < 79

तालिका 4.3.1 हाई स्कूल छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर का वितरण

स्तर	स्कोर रेंज	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च	92 से ऊपर	8	16.67%
औसत	79 से 91 तक	31	64.58%
निम्न	78 से नीचे	9	18.75%

हाई स्कूल के छात्रों का औसत स्कोर 85 और मानक विचलन (SD) 7 पाया गया। सर्वाधिक छात्र औसत श्रेणी में आते हैं (64.58%)। उच्च स्तर के छात्र केवल 16.67% हैं, जबकि निम्न स्तर के 18.75% हैं।

तालिका 4.3.2हायर सेकेंडरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर का वितरण

स्तर	स्कोर रेंज	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च	91 से ऊपर	6	12.77%
औसत	78 से 90 तक	32	68.09%
निम्न	77 से नीचे	9	19.15

विश्लेषण :

हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों का औसत स्कोर 84 और मानक विचलन 7 पाया गया। यहाँ भी अधिकांश छात्र औसत श्रेणी में हैं (68.09%)। उच्च स्तर पर केवल 12.77% छात्र हैं जबकि 19.15% छात्रों का स्तर निम्न पाया गया।

तालिका 4.3.3 हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की तुलना

क्रमांक	स्तर	हाई स्कूल (%)	हायर सेकेंडरी(%)
1	उच्च	16.67%	12.77%
2	औसत	64.58	68.09%
3	निम्न	18.75%	19.15%

विश्लेषण :

दोनों समूहों में अधिकांश छात्र औसत श्रेणी में हैं। उच्च स्तर के छात्र हाई स्कूल में थोड़ा अधिक हैं (16.67%) की तुलना में हायर सेकेंडरी में (12.77%)। निम्न स्तर के छात्रों की संख्या लगभग समान है।

निष्कर्ष (Conclusion of Analysis)

⇒ EMRS भोपाल के हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी छात्रों में औसत भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर सबसे अधिक पाया गया।

⇒ उच्च स्तर वाले छात्रों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है।

⇒ यह इंगित करता है कि छात्रों में भावनात्मक जागरूकता और नियंत्रण को बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रमों एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

4.4 लिंगआधारितआँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या:

इस अध्याय में भोपाल स्थित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) के 95 छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विश्लेषण किया गया है। इसमें 52 पुरुष तथा 43 महिला छात्र सम्मिलित हैं। शोध का उद्देश्य लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर में अंतर को समझना है।

4.4.1 आँकड़ों का संक्षिप्त विवरण:

लिंग	**कुल छात्र**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**P**
पुरुष	52	84.87	6.65	
महिला	43	83.79	6.87	. 73

ऊपर दिए गए आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि पुरुष छात्रों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर (Mean = 84.87) महिलाओं (Mean = 83.79) की तुलना अधिक है।

लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर (Significance Test - t-Test):

यह जानना कि पुरुष एवं महिला छात्रों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं।

4.4.2 सांख्यिकीय विधि:

Independent Sample t-test

दिए गए आंकड़े:

पुरुष Mean (M1) = 84.87, SD1 = 6.65, N1 = 52

महिला Mean (M2) = 83.79, SD2 = 6.87, N2 43

T test सूत्र:

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$$

$$t = \frac{84.87-83.79}{\sqrt{\frac{6.65^2}{52}+\frac{6.87^2}{43}}} = \frac{1.08}{\sqrt{\frac{44.22}{52}+\frac{47.20}{43}}} = \frac{1.08}{\sqrt{0.850+1.098}} = \frac{1.08}{\sqrt{1.948}} = \frac{1.08}{1.395} = 0.774$$

df (degree of freedom) = 52 + 43 - 2 = 93

समीक्षा :

t-मूल्य ≈ 0.77

t-टैबुलर (0.05 स्तर पर,df = 93) ≈ 1.98

निष्कर्ष :

चूंकि गणितीय t-मूल्य (0.77) <t-टैबुलर (1.98), अतः पुरुष और महिला छात्रों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

व्याख्या:

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि :

⇒ पुरुषों का औसत भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर महिलाओं की तुलना में थोड़ा अधिक है।

⇒ दोनों समूहों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता मुख्यतः मध्यम श्रेणी में पाई गई।

⇒ t-Test के अनुसार लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :

इस अध्याय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित आँकड़ों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यद्यपि पुरुष छात्रों का औसत स्कोर थोड़ा अधिक है, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है।

4.4.3 हाईस्कूलऔरहायरसेकेंडरीस्कूलकेकुल 95 बच्चोंकास्कोरिंगतालिका:

Emotional Intelligence Scoring (EMRS Students, Bhopal)

No.	Class	Self-awareness	Self-regulation	Motivation	Empathy	Social Skills	Total Score
1	HS	20	20	19	21	15	95
2	HS	19	13	15	22	18	87
3	HS	12	19	18	22	12	83
4	HS	20	20	21	18	22	101
5	HS	19	15	19	16	20	89
6	HS	17	22	21	12	14	86
7	HS	17	17	16	13	13	76
8	HS	13	21	16	21	17	88
9	HS	18	17	20	19	15	89
10	HS	14	15	16	18	12	75
11	HS	21	15	18	18	12	84
12	HS	20	12	13	13	15	73
13	HS	17	12	14	17	17	77
14	HS	15	18	17	13	13	76
15	HS	19	15	22	12	18	86
16	HS	13	18	21	21	20	93
17	HS	22	16	18	15	14	85
18	HS	13	19	22	21	13	88
19	HS	12	18	17	22	19	88
20	HS	14	17	13	21	18	83
21	HS	19	18	19	14	22	92
22	HS	14	13	19	20	18	84
23	HS	16	16	20	22	15	89
24	HS	18	21	12	21	22	94
25	HS	15	12	22	18	19	86
26	HS	22	12	13	17	15	79
27	HS	18	18	13	22	17	88
28	HS	14	15	18	12	18	77
29	HS	14	20	13	13	19	79
30	HS	18	15	18	19	15	85

Emotional Intelligence Scoring (EMRS Students, Bhopal)

31	HS	15	12	12	17	17	73
32	HS	13	14	13	15	12	67
33	HS	15	12	13	20	21	81
34	HS	13	19	20	13	20	85
35	HS	17	22	13	12	20	84
36	HS	17	20	13	17	16	83
37	HS	19	15	13	15	18	80
38	HS	21	12	12	13	19	77
39	HS	20	20	20	13	16	89
40	HS	18	21	18	19	18	94
41	HS	17	16	17	17	15	82
42	HS	21	20	19	22	14	96
43	HS	14	21	18	18	19	90
44	HS	19	20	17	19	17	92
45	HS	12	16	19	16	18	81
46	HS	17	15	18	13	22	85
47	HS	14	14	19	20	20	87
48	HSS	22	15	13	16	13	79
49	HSS	17	21	19	22	21	100
50	HSS	14	12	20	16	18	80
51	HSS	15	19	16	19	21	90
52	HSS	22	13	19	13	16	83
53	HSS	21	13	17	18	16	85
54	HSS	20	17	17	18	14	86
55	HSS	21	14	13	13	20	81
56	HSS	21	18	13	19	21	92
57	HSS	14	15	13	18	22	82
58	HSS	15	20	13	18	14	80
59	HSS	13	18	17	16	22	86
60	HSS	22	14	15	13	12	76
61	HSS	14	12	20	21	18	85

Emotional Intelligence Scoring (EMRS Students, Bhopal)

62	HSS	13	14	13	16	16	72
63	HSS	16	20	22	18	12	88
64	HSS	20	17	19	15	16	87
65	HSS	21	15	14	14	12	76
66	HSS	21	13	21	18	14	87
67	HSS	13	17	13	17	15	75
68	HSS	15	17	17	16	16	81
69	HSS	15	17	16	12	16	76
70	HSS	18	17	13	21	19	88
71	HSS	16	14	20	14	22	86
72	HSS	16	21	20	15	18	90
73	HSS	18	14	20	13	20	85
74	HSS	15	18	20	13	21	87
75	HSS	20	19	14	17	18	88
76	HSS	20	15	21	12	12	80
77	HSS	14	18	12	12	21	77
78	HSS	13	14	21	20	19	87
79	HSS	19	17	14	19	12	81
80	HSS	14	15	13	17	13	72
81	HSS	14	21	17	20	22	94
82	HSS	20	22	15	14	17	88
83	HSS	14	13	18	13	13	71
84	HSS	21	18	15	19	22	95
85	HSS	20	14	20	17	18	89
86	HSS	15	20	21	14	13	83
87	HSS	16	13	21	18	14	82
88	HSS	21	21	19	20	19	100
89	HSS	21	12	14	12	16	75
90	HSS	20	12	14	18	15	79
91	HSS	18	13	21	15	14	81
92	HSS	17	17	17	16	19	86

Emotional Intelligence Scoring (EMRS Students, Bhopal)

93	HSS	18	19	18	20	14	89
94	HSS	20	17	19	18	18	92
95	HSS	15	19	17	16	16	83

निष्कर्ष (Conclusion of Data Analysis):अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि

⇒ हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर समान है।

⇒ औसत स्कोर में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया।

⇒ यह भी दर्शाता है कि विद्यालय स्तर पर छात्रों के आंतरिक भावनात्मक विकास में संतुलन है।

⇒ अवलोकन - उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों का औसत EI स्कोर थोड़ा अधिक है।

⇒ दोनो समूहों मे EI स्तर लगभग सन्तुलित है। जोतुलनीयभावनात्मकविकासकोदर्शाताहै

अध्याय- 5

निष्कर्ष, सुझाव एवं अनुशंसा

5.1 परिचय

भावनात्मक बुद्धिमत्ता आज के युग की एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं मानसिक योग्यता बन चुकी है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि शैक्षणिक एवं व्यावसायिक सफलता में भी सहायक होती है। इस शोध में भोपाल जिले के एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया गया, जिसके आधार पर यह अध्याय शोध के निष्कर्ष, सुझाव, सीमाएँ एवं भविष्य के शोध हेतु संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

5.2 प्रमुख निष्कर्ष (MAJOR FINDINGS)

- छात्रों का औसत भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर सामान्य से थोड़ा अधिक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि EMRS छात्रों में भावनात्मक जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति और सामाजिक कौशल का संतुलन है।

- लड़कियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर लड़कों की तुलना में अधिकथा, और यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण भी सिद्ध हुआ। इसका कारण यह हो सकता है कि लड़कियाँ सामाजिक एवं पारिवारिक रूप से अधिक भावनात्मक रूप से जागरूक होती हैं या उनके बीच अधिक भावनात्मक अभिव्यक्ति की स्वीकृति होती है।

- HIGH SCHOOL और HIGHER SECONDARY छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।यह दर्शाता है कि छात्रों की भावनात्मक क्षमता कक्षा स्तर के साथ अधिक भिन्न नहीं होती, बल्कि यह सामाजिक अनुभवों, पारिवारिक परिवेश और व्यक्तिगत स्वभाव पर अधिक निर्भर करती है।

- **5.3 व्यावहारिक सुझाव (PRACTICAL SUGGESTIONS)**

- **विद्यालयों के लिए:**

1 विद्यालयों मेंभावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमोंकी व्यवस्था की जानी चाहिए।
2 सप्ताह में एक बार जीवन-कौशल (LIFE SKILLS) आधारित कक्षाका आयोजन किया जाए, जिसमें सहानुभूति, आत्म-जागरूकता, संवाद कौशल, और भावनात्मक नियंत्रण पर ध्यान दिया जाए।
3 EMRS विद्यालयों मेंप्रशिक्षित स्कूली परामर्शदाता (COUNSELOR)की नियुक्ति की जानी चाहिए जो छात्रों को उनके मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक मुद्दों पर सहायता दे सकें।

2. **शिक्षकों के लिए:**

1 शिक्षकों कोभावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षणदिया जाना चाहिए ताकि वे छात्रों की भावनात्मक आवश्यकताओं को पहचान सकें।
2 शिक्षक छात्रों से सहानुभूति एवं समर्थन-युक्त संवाद करें, ताकि भावनात्मक खुलेपन की संस्कृति विकसित हो सके।

छात्रों के लिए:

1. छात्रों कोस्व-निरीक्षण (SELF-REFLECTION)औरभावनात्मक अभिव्यक्तिकी प्रेरणा दी जाए।
2. समूह गतिविधियाँ, संवादात्मक सत्र, थियेटर, कला, और संगीत जैसी रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए जो भावनाओं को समझने और व्यक्त करने में सहायक हों।
3. ध्यान (MEDITATION), योग, और माइंडफुलनेसजैसी तकनीकों को दैनिक दिनचर्या में शामिल किया जाए।

5.4 अनुसंधान की सीमाएँ (LIMITATIONS OF THE STUDY)

1. यह अध्ययन केवल भोपाल जिले के सीमित संख्या के EMRS विद्यालयों पर केंद्रित था, जिससे इसके निष्कर्षों कीसामान्यीकरण की क्षमता सीमितहो सकती है।
2. अध्ययन में केवलमात्रात्मक विधियों (quantitative methods) का प्रयोग किया गया; गुणात्मक विश्लेषण (जैसे साक्षात्कार, केस स्टडी) नहीं किया गया।
3. उपयोग किया गया परीक्षण यंत्र एक निश्चित ढांचा में सीमित था, जिससे EI के सभी पहलुओं को मापना संभव नहीं हुआ।

5.5 भविष्य के शोध हेतु सुझाव (SUGGESTIONS FOR FUTURE RESEARCH)

- इस विषय परबहु-राज्यीय या राष्ट्रीय स्तर परशोध कार्य किया जा सकता है ताकि जनजातीय छात्रों की EI की व्यापक समझ विकसित हो।
- गुणात्मक शोधजैसे Case Studies, Observations, और In-depth Interviews के माध्यम से छात्रों की EI का गहरा विश्लेषण किया जा सकता है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध अन्य मनोवैज्ञानिक चर (जैसे: आत्म-सम्मान, प्रेरणा, तनाव प्रबंधन) एवंशैक्षणिक प्रदर्शनसे भी अध्ययन का विषय बन सकता है।
- यह अध्ययन विभिन्नसांस्कृतिक, भाषाई एवं सामाजिक पृष्ठभूमिके EMRS छात्रों के साथ तुलनात्मक रूप में भी किया जा सकता है।

1.6 निष्कर्ष

1.7 अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि EMRS विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर संतोषजनक है, परंतु कुछ पहलुओं में सुधार की आवश्यकता है। यदि शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधन एवं समाज की सामूहिक भागीदारी से उचित योजनाएँ और रणनीतियाँ अपनाई जाएं, तो इन छात्रों की EI को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

भावनात्मक रूप से सशक्त छात्र न केवलअच्छे विद्यार्थीबनते हैं, बल्कि वे भविष्य मेंसमाज के उत्तरदायी नागरिकके रूप में भी विकसित होते हैं।

संदर्भ (References):-

1. शर्मा, पी. (2015). भारतीय विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन।

2. सिंह, आर. (2020). आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियाँ।

3. एरिकसन ई, 1968. पहचानः युवा और संकट न्यूयॉर्क नॉर्टन प्रकाशन।

4. थॉमस, डी. (2003)। जुनून से भावनाओं तकः एक धर्मनिरपेक्ष मनोवैज्ञानिक श्रेणी का निर्माण। कैम्ब्रिजः

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।

5. गोलेमैन, डी 1995 भावनात्मक बुद्धिमत्ताः यह उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण क्यों है। न्यूयॉर्क बैंटम पुस्तकें।

6. सैलोवी, पी. मेयर, जे.डी. 1990. भावनात्मक बुद्धिमत्ता। कल्पना, अनुभूति और व्यक्तित्व। 9:185-2111

7. गर्ग वंदना (2017) आदिवासी और गैर आदिवासी किशोरों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज वॉल्यूम 7 अंक 12, दिसंबर 20171

8. त्रिपाठी आई. समायोजन से संबंधित भावनात्मक बुद्धिमत्ताः रांची (झारखंड) जिले के आदिवासी गैर-आदिवासी किशोरों का एक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ हेल्थ साइंस रिसर्च। 2016; 6(4):439-4431

9. राठी, जे. (2015) स्कूल के प्रकार के संबंध में किशोर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च 2015; 1(13): 456-4581

10. कुमार, एस. (2014)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन का संबंध। कॉन्फ्लक्स जर्नल ऑफ एजुकेशन, 1 (11), 66-691

11. लाल, सी. (2014)। अनुसूचित जाति के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन, शैक्षणिक उपलब्धि, घरेलू वातावरण और माध्यमिक स्तर पर आत्म अवधारणा के संबंध में (पीएचडी थीसिस, शिक्षा), चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय।

12. चामुंडेश्वरी, एस. (2013)। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि। अर्थशास्त्र और प्रबंधन विज्ञान में अकादमिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2 (4), 178-1871 doi: 10.6007/JAREMS/v2-14/1261

13. उमादेवी, एल. (2013). किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, 30 (2), 197-208.

14. अजय, जे. टी., और इयेकेपोलर, एस. ए. ओ. (2019)। गणित में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और उपलब्धि वाले

छात्र एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस ए रिसर्च (आईजेएसआर), 8 (5), 1907-19131 15. डार, एस. ए., और गिलानी, एस. जेड. ए. (2022)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक

बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 8 (103-108.

16. धानी, पी., और शर्मा, टी. (2017).

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध: भारतीय संदर्भ में एक अध्ययन। इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट, 11(51133-1139. https://doi.org/10.3923/ibm.2017.1133.1139

17. एबिनाग्बोम, एम. ई., और निज़ाम, आई. (2016). छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड बिजनेस एंड मैनेजमेंट स्टडीज, 4(1), 10-18.

https://doi.org/10.24924/ijabm/2016.04/v4.iss1/10.18

18. तेहा, एम., और अव्वाद, एन. (2020). भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव से निपटने की शैली के साथ इसका

संबंध। स्वास्थ्य मनोविज्ञान खुला, 7(2), 1-9. https://doi.org/10.1177/2055102 0970416

19. कुमार, एम. (2020). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक अध्ययन.

शैनलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, 8(3), 114-119.

20. लिली, के.वी., और वेणुकापल्ली, एस. (2023). जनसंपर्क शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-प्रभावकारिता. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज स्टडीज, 5 (11), 63-7 https://doi.org/10.32996/jhsss 21. मेयर, जे. डी., सैलोवी, पी., और कारुसो, डी. आर. (2000)। एक मानक बुद्धिमत्ता के रूप में भावनात्मक

बुद्धिमत्ता। आर. जे. स्टर्नबर्ग (एड.), हैंडबुक ऑफ ह्यूमन इंटेलिजेंस (द्वितीय संस्करण कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस)

22. सुराना, ए., और रावत, ए. (2014)। बी.एड. के प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का एक अध्ययन। जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, 9 (1), 88-971

23. वांग, एल. (2022)। शिक्षक की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, महिला जुड़ाव, शिक्षक की आत्म-प्रभावकारिता और छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की खोजः एक मध्यम मध्यस्थता मॉडल। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 12, लेख 810559। https://doi.org/10.39/fpsyg.2021.810559.

24. बार-ऑन, रेवेन (1997).ईक्यू-आई: इमोशनल इंटेलिजेंस मापन यंत्र.मल्टी हेल्थ सिस्टम्स, टोरंटो।

25. सोनी, (कु.) अनिता एवं शर्मा, अशोक (2017).भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापन पैमाना (EMOTIONAL INTELLIGENCE SCALE). नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा।

26. रानी, किरण एवं गुप्ता, रेखा (2020).जनजातीय किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक तुलनात्मक अध्ययन.इंडियन साइकोलॉजिकल जर्नल, 8(2), 145–152।

27. मिश्रा, बी.के. (2008).शिक्षण एवं मानव विकास का मनोविज्ञान.प्रभात प्रकाशन, इलाहाबाद।

28.मंगल, एस.के. (2013).उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान.पीएचआई लर्निंग, नई दिल्ली।

शोध पत्रिकाएं व लेख

29. शर्मा, मीनाक्षी (2016).विद्यालय छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन.इंडियन जर्नल ऑफ सायकोलॉजी एंड एजुकेशन, खंड 6(2), पृष्ठ 54–61।

30.चौहान, एस.एस. (2010).माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता.जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (एनसीईआरटी), खंड XXXVI(1), पृष्ठ 34–41।

31.सिंह, दीपा (2006).कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता.रिस्पॉन्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

ऑनलाइन स्रोत / सरकारी वेबसाइटें

1. https://tribal.nic.in– भारत सरकार, जनजातीय
2. शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक शोध पत्रिकाएं